दिव्य लीलामृत

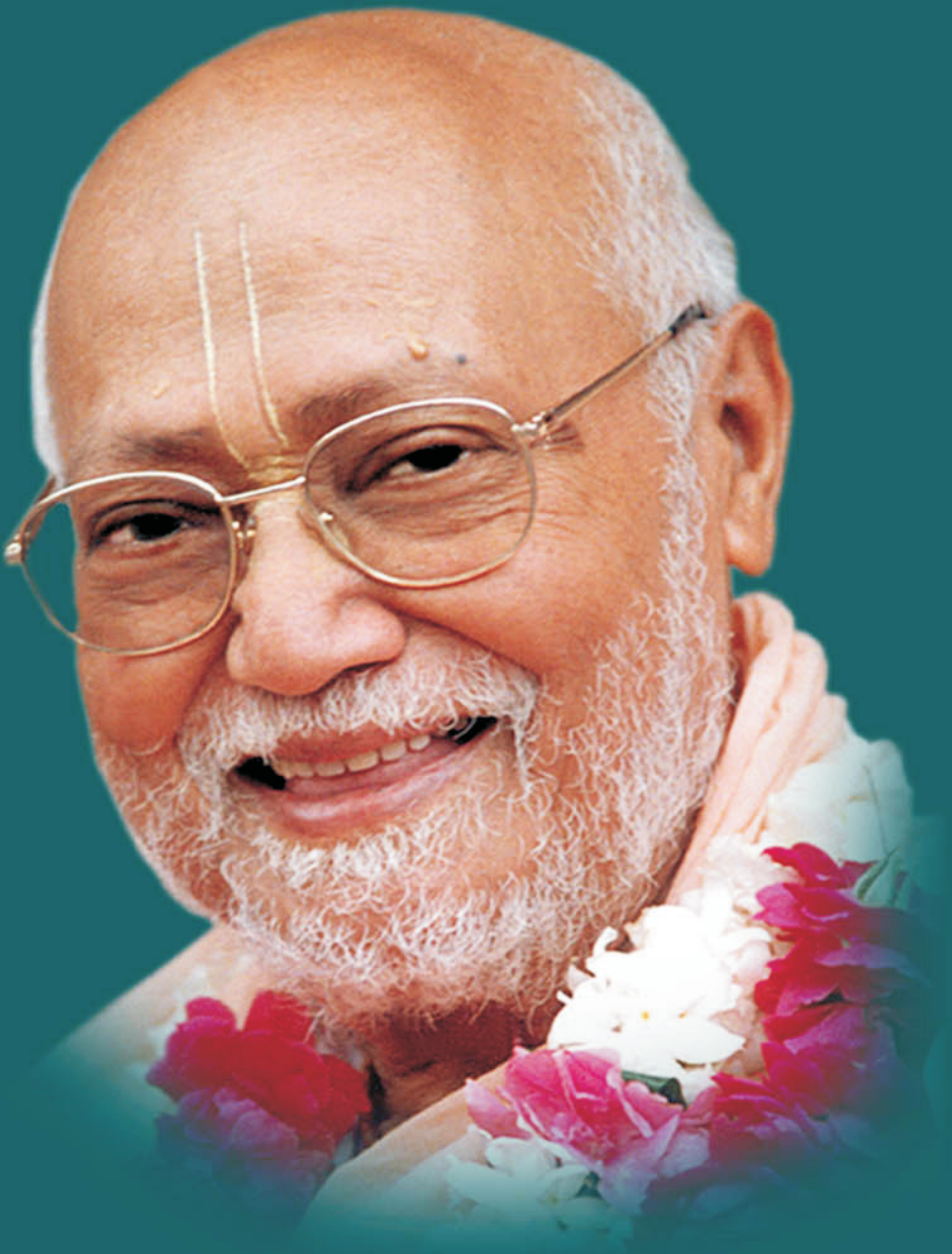

अस्पताल बन गया एक तीर्थ स्थान

SGD

“ऐसे साधुओं में दिव्य शक्तियाँ होती हैं। वे अपनी इच्छा के अनुसार स्वस्थ हो सकते हैं। और हमें ऐसा भी प्रतीत हो रहा है कि वे अपने शिष्यों और शुभचिंतकों की हार्दिक प्रार्थनाओं को सुन रहे हैं।”

SGD

श्रीलगुरुदेव

SGD

27 नवंबर, 2013 की रात्रि से श्रील गुरुदेव के दिव्य शरीर में कोई हलचल नहीं थी। अगले दिन सुबह 6 बजे, उनको GNRC, गुवाहाटी, अस्पताल में लाया गया था। चिकित्सकों ने उनके स्वास्थ्य की स्थिति का आकलन किया और इसे अत्यंत गंभीर माना। उनका अनुमान था कि श्रील गुरुदेव लगभग चार-पांच दिनों में ही अपनी

भौम-लीला संवरण कर सकते हैं। उन्होंने हमें बताया कि स्वास्थ्य की ऐसी गंभीर स्थिति में, और विशेष रूप से उस आयु के व्यक्ति के लिए नाममात्र का ही चिकित्सा उपचार उपलब्ध हैं, इसलिए अब प्रार्थना ही सर्वप्रधान है।

इस संदेश को मठ के governing body के सदस्यों और विश्व भर में श्रील गुरुदेव के गुरु-भाईयों तथा शिष्यों तक पहुँचाया गया। शीघ्र ही, बहुत

सारे भक्त गुवाहाटी के लिए रवाना हुए। कुछ ही घंटों में, श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ की गुवाहाटी शाखा में भक्तों की बाढ़ आ गई। प्रति दिन भक्त अस्पताल में आकर श्रील गुरुदेव के दर्शन करने के लिए लम्बी पंक्ति (qeue) में खड़े हो जाते थे। समय-समय पर उन्हें श्रील गुरुदेव की स्वास्थ्य स्थिति के बारे में संवाद दिया जाता था।

श्रील गुरुदेव के दर्शन के लिए आए हुए भक्तों से

अस्पताल निरंतर भरा रहता था। किसी ने भी अस्पताल के visting hours पर कोई ध्यान नहीं दिया। इसके बारे में अस्पताल के प्रबंधन की ओर से बार-बार शिकायतें आती थीं, किन्तु श्रील गुरुदेव के प्रति भक्तों की भावनाएं इतनी प्रबल थीं कि उन्हें उस स्थान से दूर रख पाना किसी के लिए भी संभवपर नहीं था। अतः, अस्पताल का कोई प्रशासनिक व्यक्ति या कर्मचारी भी भक्तों की बाढ़ को रोक नहीं पाया।

अस्पताल में बैठने या विश्राम करने की उचित जगह नहीं होने पर भी, कई भक्त अधिक से अधिक समय वहीं रहना पसंद करते थे। अस्पताल की लॉबी में या आईसीयु के आस-पास रहने के लिए उन्हें कई शारीरिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा किन्तु वे पीछे नहीं हटे। इतना ही नहीं, कई भक्तों का जप, कीर्तन, प्रसाद ग्रहण और अन्य भक्ति सम्बंधित कार्य वहीं पर संपन्न होते थे। उनके लिए तो वह स्थान कोई

साधारण अस्पताल नहीं, अपितु एक मठ जैसा ही था। वास्तव में, इसमें कोई संदेह भी नहीं है, क्योंकि साधु के हृदय में भगवान् का नित्य वास होने के कारण वे जहाँ पर भी रहते हैं वह स्थान मंदिर ही कहा जाता है। इस विषय में, भगवान् स्वयं दुर्वासा मुनि से कहते हैं–

साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम्।
मदन्यत् ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि।।
(श्रीमद् भागवतम् 9-4-68)

'साधुगण मेरे हृदय हैं और मैं उनका हृदय हूँ। वे मेरे

अतिरिक्त कुछ नहीं जानते और मैं भी उनको छोड़कर कुछ नहीं जानता हूँ।’

उन दिनों में, श्रील गुरुदेव ने विशेष रूप से कृपा करते हुए सभी भक्तों को अपनी विभिन्न प्रकार की सेवाओं का अवसर प्रदान किया। एवं भक्तगण भी, अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार सब समय सेवाओं में नियोजित रहते थे। हम श्रील गुरुदेव की साक्षात् सेवाओं में व्यस्त रहते, अन्य भक्त तरह

तरह से हमारी सहायता करते। दीर्घकाल के लिए श्रील गुरुदेव का संग लाभ करने के उद्देश्य से कई भक्त भगवान् से प्रार्थना कर रहे थे, तो कई भक्त अस्पताल के पास, गलियों में, कीर्तन करके जन-साधारण को संकीर्तन सेवा में नियोजित कर रहे थे। कई अन्य भक्तों ने श्रील गुरुदेव के स्वास्थ्य में सुधार के लिए और भी उत्तम सेवा के साधनों एवं होमियोपैथी, आयुर्वेद व अन्य-अन्य उपचार पद्धतियों के द्वारा चिकित्सा की

संभावनाओं के बारे में सोचकर अपने मन और बुद्धि को उनकी सेवा में लगा दिया। इस तरह, भक्तों की विविध प्रकार की सभी शारीरिक और मानसिक क्षमताएँ, श्रील गुरुदेव की सेवा के एकमात्र उद्देश्य से एकीकृत हो गईं थीं।

भक्तों की इस प्रकार की भक्तिमयी चेष्टाओं के उत्तर में श्रील गुरुदेव ने अस्पताल में भर्ती होने के तीसरे दिन अपने दिव्य शरीर में कुछ गतिविधियां

प्रदर्शित कर अपनी प्रसन्नता का पहला संकेत दिया। उनके चन्द्रवदन पर आभा भी थी। इसे देखकर चिकित्सकों ने अपना आश्चर्य अभिव्यक्त करते हुए कहा, "अति सुंदर! हम उनके चेहरे पर एक दिव्य आभा का दर्शन कर पा रहे हैं। क्या आप भी उसे देख पा रहे हैं?" सच में, उस दिन उनका दर्शन कुछ अलग ही था। उस दिन के बाद, भक्तों की प्रार्थनाओं और सेवाओं में तीव्रता और भी बढ गई। चिकित्सकों के अनुसार

अत्यंत निर्णायक होने वाले पहले 5 दिन धीरे-धीरे बीत गए। उनका पूर्वानुमान गलत होते देख भक्तों के आनंद की कोई सीमा नहीं रही। साथ-ही-साथ श्रील गुरुदेव की दिव्य शक्तियों में उनका विश्वास और भी बढ़ गया। डॉ. एन. सी. बोरा श्रील गुरुदेव के स्वास्थ्य में हुए इस हलके सुधार को देखकर कहने लगे, "ऐसे साधुओं में दिव्य शक्तियाँ होती हैं। वे अपनी इच्छा के अनुसार स्वस्थ हो सकते हैं। और हमें ऐसा भी प्रतीत हो रहा है कि वे अपने

शिष्यों और शुभचिंतकों की हार्दिक प्रार्थनाओं को सुन रहे हैं। प्रार्थनाओं में अपार शक्ति होती है—इस बात का मुझे विश्वास है। कृपया आप अपनी प्रार्थनाएँ जारी रखें।”

जब भी डॉ. बोरा श्रील गुरुदेव को देखने आईसीयू वार्ड में आते, वे सब से पहले उनके चरण-कमलों के दर्शन करते, अपनी हथेलियों से उनके चरणों को मृदु भाव से स्पर्श कर उन हथेलियों को अपने मस्तक पर

रखते। बाद में, वे अपनी आँखें बंद कर लेते और मन में कुछ प्रार्थना करते। उसके बाद ही, वे उनके स्वास्थ्य का अवलोकन कर उस विषय में हमें कुछ परामर्श देते।

प्रत्येक दिन, कुछ चिकित्सक, नर्सें और अन्य कर्मचारी वर्ग, अस्पताल में अपना कार्य आरम्भ करने से पहले श्रील गुरुदेव को प्रणाम करने आते थे। अपनी शिफ्ट समाप्त होने के बाद घर लौटने से पहले, वे पुनः उन्हें

प्रणाम करके जाते थे। अस्पताल में भर्ती रोगियों के सगे-सम्बन्धी visiting hours में आकर उन्हें प्रणाम कर अपने प्रियजनों के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए उनसे प्रार्थना करते थे। अस्पताल के आस-पड़ोस के निवासी और दुकानदार भी उनके स्वास्थ्य की स्थिति के बारे में जानकारी लेते रहते थे। इस तरह, श्रील गुरुदेव ने अस्पताल के भीतर और आस-पास के सभी लोगों के मन को आकर्षित कर एवं उस स्थान को सम्पूर्ण भक्तिमय

बनाकर उसे भी एक तीर्थ बना दिया। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि साधु जिस स्थान पर जाते हैं, वे अपनी भक्ति की शक्ति से उस स्थान को तीर्थ में परिवर्तित कर देते हैं।

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो।
तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता।।
(श्रीमद् भागवतम् 1/13/10)

'(युधिष्ठिर महराज ने विदुर से कहा,) हे प्रभो! आप जैसे महाभागवत स्वयं तीर्थ स्वरूप हैं। आप अपने अंतःकरण में

स्थित भगवान् की पवित्रता के बल से पापियों के पाप से मलिन स्थान को पवित्र कर उसे तीर्थ में परिवर्तित कर देते हैं।’

Play Store

SrilaGurudeva

SGD